फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 224 प्रभात जयपुर, मंगलवार 18 मार्च, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

ARBiT

"Ohh, Ohhh, Ohhhh..." Abid Ali

When India was on the verge of a historic victory, Abid and Gavaskar were occupying the two ends

Global Recycling Day: Rethinking Waste, Reshaping the Future

Trend to Blend — We've rounded up ideas to help you rock different hair colour for men

प्र.मंत्री मोदी ने हाथी (भारत) व ड्रैगन (चीन) की जो बात कही, चीन को बहुत पसंद आई

चीन के प्रवक्ता माओ निंग ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि दोनों नेताओं ने आपसी सहयोग पर जो सहमति बनाई है, उसका प्रशासन के हर स्तर पर क्रियान्वयन शुरु हो गया है तथा सकारात्मक (पॉज़िटिव) नतीजे सामने आये हैं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 मार्च। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत-चीन संबंधों को लकर लैक्स फ्रीडमैन के पॉडकास्ट पर की गई टिप्पणी पर चीन ने सोमवार को "प्रसन्नता" व्यक्त की। चीन ने कहा कि हाथी और ड्रैगन का सौहार्दपूर्ण नृत्य दोनों देशों के लिये एकमात्र विकल्प है।

- **प्र.मंत्री मोदी ने अमेरिकी पॉडकास्टर, लैक्स फ्रीडमैन से बातचीत में इस सहयोग के नृत्य की बात कही थी।**
- **मोदी ने कहा था कि यह ऐतिहासिक तथ्य है कि चीन व भारत ने हमेशा एक दूसरे से काफी कुछ सीखा है तथा दोनों के संबंध बहुत मजबूत रहे हैं, जिनका आधार गहरे सांस्कृतिक संबंध हैं तथा इतिहास गवाह है कि भारत व चीन का विश्व की कुल जीडीपी में पचास प्रतिशत का योगदान होता था।**

चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने बीज़िंग में एक मीडिया-ब्रीफिंग के दौरान कहा, "हाल ही के महीनों में, दोनों ही पक्षों ने उनके नेताओं के बीच परस्पर बनी महत्वपूर्ण सहमति को गंभीरतापूर्वक कार्यान्वित किया है, विभिन्न स्तरों पर परस्पर आदान-प्रदान तथा क्रियात्मक सहयोग को मजबूत किया है तथा उसके कई सकारात्मक नतीजे सामने आये हैं।"

अमेरिकन पॉडकास्टर लैक्स फ्रीडमैन के साथ हुई बातचीत में, मोदी ने उन प्रयासों का उल्लेख किया, जो यह सुनिश्चित करने के लिए किये जा रहे हैं कि दोनों देशों के बीच के मतभेद बढ़कर संघर्ष का रूप नहीं लें तथा परस्पर संवाद कूटनीतिक उपायों का मुख्य अंग बना रहे।

प्रधानमंत्री मोदी ने लैक्स फ्रीडमैन को बताया, "अगर आप सदियों के इतिहास पर नज़र डालें (तो पाएंग कि) भारत और चीन एक-दूसरे से सीखते रहे हैं। दोनों ने मिलकर सदैव ही किसी न किसी रूप में, विश्व-कल्याण में योगदान दिया है। पूराने रिकॉर्ड बताते हैं कि एक समय, केवल भारत और चीन की जीडीपी मिलकर, विश्व की जीडीपी के 50 प्रतिशत से ज्यादा थी। यह भारत का कितना बड़ा योगदान था और मेरा मानना है कि हमारा जुड़ाव बहुत ही मजबूत है, हमारे सांस्कृतिक संबंध बहुत गहरे हैं।"

उन्होंने कहा, "संवाद उस स्थायी तथा सहयोगपूर्ण संबंध के निर्माण की कुंजी है, जिसमें दोनों ही देशों की भलाई एवं लाभ निहित है।"

निंग ने कहा, "हम चीन-भारत संबंधों पर प्रधानमंत्री मोदी की हाल ही की सकारात्मक टिप्पणियों की कद्र करते हैं। पिछले अक्टूबर में राष्ट्रपति शी जिनपिंग तथा प्रधानमंत्री मोदी के बीच कज़ान में बड़ी सफल मीटिंग हुई थी तथा उस मीटिंग ने चीन-भारत संबंधों को सुधारने तथा विकसित करने के लिए कूटनीतिक मार्गदर्शन प्रदान किया था।"

विश्व टॉप 50 यूनिवर्सिटीज़ में भारत की नौ

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 मार्च। उच्चशिक्षा का वैश्विक परिदृश्य भारी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। एशियाई खासकर भारतीय संस्थानों को प्रमुखता मिल रही हैं। पारम्परिक तौर पर इस रैंकिंग में पश्चिमी देशों के संस्थानों का बोलबाला रहता था, लेकिन हालिया रुझान एक भारी बदलाव दर्शाते हैं।

विशिष्ट विषयों में विश्व के टॉप क्यू एस-50 में भारत के 9 संस्थान शामिल

- **भारत अब विदेशी स्टूडेंट्स को आकर्षित कर सकता है, इस रैंकिंग के कारण। इस प्रयास में मदद इससे भी मिल रही है कि अमेरिका व इंगलैंड में उच्च शिक्षा का खर्च अब और बढ़ गया है तथा विद्यार्थी अन्य विकल्प भी ढूंढ़ने लगे हैं।**

किए गए हैं। इंजीनियरिंग, मिनरल, और माइनिंग में आईएसएम धनबाद 26 वें नम्बर पर है इसके बाद इसी श्रेणी में आईआईटी बॉम्बे 40 वें और आईआईटी खड़गपुर 45 वें नम्बर पर है। इंजीनियरिंग - इलैक्ट्रिकल और इलैक्ट्रॉनिक श्रेणी में आईआईटी दिल्ली 47 वें और आईआईटी बॉम्बे इसी श्रेणी में 50 वें नम्बर पर है। बिजनैस और मैनेजमैंट स्टडीज़ में आईआईएम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सैन्ट्रल स्कूल, तेलंगाना में तेलुगू, तमिलनाडु में तमिल, कन्नड़ कर्नाटक में, मलयालम केरल में नहीं पढ़ाते''

स्टालिन ने भाषा व डीलिमिटेशन के मुद्दे को, अगले विधानसभा चुनाव की ज़मीन तैयार करने का काम कर लिया है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 मार्च। तमिलनाडु में सत्तारूढ़ दल द्रमुक के लिये बिखरा हुआ विपक्ष तथा अन्नाद्रमुक की अंदरूनी लड़ाई खुशी का संदेश लेकर आई है, क्योंकि इससे द्रमुक को लगभग एक साल बाद होने वाले विधानसभा चुनाव में सत्ता-विरोधी सोच से लड़ने में मदद मिलेगी। ज्ञातव्य है कि अन्नाद्रमुक तमिलनाडु की दूसरी प्रमुख द्रविड़ पार्टी हैं।

अन्नाद्रमुक पहले ही कमजोर हो चुकी है तथा पूर्व मुख्यमंत्री तथा पार्टी महासचिव पार्टी को एकजुट रखने के लिए जूझ रहे हैं, जबकि पार्टी के प्रभावशाली नेताओं ने इडापल्ली पलानीस्वामी को परेशान करना शुरु कर दिया है।

अन्नाद्रमुक के वरिष्ठ नेता के.ए. सैंगोटियान ने हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रशंसा की थी तथा वे अन्नाद्रमुक अध्यक्ष द्वारा बुलाई गई मीटिंग में शामिल नहीं हुये थे। इससे अन्नाद्रमुक के संभावित बिखराव की अटकलें लगाई जा रही हैं और द्रमुक मुख्यालय में प्रसन्नता की लहर दिखाई दे रही है।

- **दूसरी ओर, भाजपा, तमिलनाडु में राजनीतिक दलों के नेताओं को तोड़ने का काम बखूबी कर रही है, विशेषकर अन्नाद्रमुक के कई प्रमुख नेताओं ने भाजपा से बातचीत शुरु भी कर दी है।**
- **विपक्ष में फैली यह राजनीतिक अराजकता भी स्टालिन के पक्ष में मददगार सिद्ध हो रही है। जितना विपक्ष बिखरता है, उतना ही द्रमुक को लाभ होता है, क्योंकि स्टालिन का मानना है, उसके लगातार प्रचार से भाजपा को अभिमानी, आक्रामक नॉर्थ इण्डिया का प्रतीक माना जा रहा है, जो तमिलनाडु का वाजिब शेयर, बजट में उसका हिस्सा, नहीं देता, हालांकि, साउथ इण्डिया केन्द्रीय ट्रेज़री में ज्यादा टैक्स जमा कराते है, नॉर्थ इण्डिया की तुलना में।**

इस समय भाजपा तमिलनाडु की राजनीति में परभक्षी (प्रीडेटरी) की भूमिका निभा रही है अर्थात् वह अन्य पार्टियों के नेताओं को अपनी ओर खींच रही है। ऐसी स्थिति में, अगर उसके निशाने पर कुछ वरिष्ठ अन्नाद्रमुक नेता आते हैं तो इससे द्रमुक को ही मदद मिलेगी, क्योंकि किसी भी नेता के पार्टी छोड़ने से अन्नाद्रमुक और भी कमजोर होगी। हालांकि, भाषा और परिसीमन के मुद्दों पर भाजपा के वर्तमान अड़ियल रुख के कारण, भाजपा को इससे कोई खास लाभ मिलने की संभावना तो बहुत ही कम है। यह चेन्नई के कई राजनैतिक विश्लेषकों की सुविचारित मान्यता है।

और स्टालिन तो भाषा के मुद्दे पर पहले ही पूरा जोर दे रहे हैं। चूँकि उन्होंने इस मुद्दे को पूरी तरह अपना रखा है, वे तमिलनाडु के ऐसे नेता बन गये हैं, जो केन्द्र को करीब-करीब अकेले ही टक्कर दे रहे हैं। यही नहीं, वे दक्षिण

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)